पाठ – 7.3

जेबकतरा

ज्ञान प्रकाश विवेक

जीवन परिचय

ज्ञान प्रकाश विवेक वर्तमान में हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण नाम हैं। आपने कहानी, कविता और हिन्दी ग़ज़लें लिखी हैं और लघुकथाएँ भी। आपका जन्म हरियाणा के बहादुरगढ़ जिले में 1948 में हुआ था। अपके कई कहानी संग्रह (अलग–अलग दिशाएँ, शहर गवाह है, उसकी ज़मीन, शिकारगाह और मुसाफिरखाना) एक कविता संग्रह (दीवार से झांकती रौशनी) और ग़ज़ल संग्रह (धूप के हस्ताक्षर आँखों में आसमान) प्रकाशित हो चुके हैं। आपका एक उपन्यास 'दिल्ली दरवाज़ा' काफी मशहूर हुआ है। आपको हरियाणा साहित्य अकादमी ने तीन बार पुरस्कृत किया है।

लघु कथाएँ

बस से उतरकर जेब में हाथ डाला। मैं चौंक पड़ा। जेब कट चुकी थी। जेब में था भी क्या? कुल नौ रुपए और एक खत, जो मैंने माँ को लिखा था कि मेरी नौकरी छूट गई है। अभी पैसे नहीं भेज पाऊँगा...। तीन दिनों से वह पोस्ट कार्ड जेब में पड़ा था। पोस्ट करने को मन ही नहीं कर रहा था।

नौ रुपए जा चुके थे। यूँ नौ रुपए कोई बड़ी रकम नहीं थी, लेकिन जिसकी नौकरी छूट चुकी हो, उसके लिए नौ रुपये नौ सौ से कम नहीं होते।

कुछ दिन गुजरे माँ का खत मिला। पढ़ने से पूर्व मैं सहम गया। जरूर पैसे भेजने को लिखा होगा। लेकिन खत पढ़कर मैं हैरान रह गया। माँ ने लिखा था– "बेटा तेरा भेजा पचास रुपये का मनीऑर्डर मिल गया है। तू कितना अच्छा है रे... पैसे भेजने में कभी लापरवाही नहीं बरतता"

मैं इसी उधेड़बुन में लग गया कि आखिर माँ को मनी ऑर्डर किसने भेजा होगा?

कुछ दिन बाद एक और पत्र मिला। चंद लाइने थीं आड़ी तिरछी। बड़ी मुश्किल से खत पढ़ पाया।

लिखा था "भाई नौ रुपये तुम्हारे और इकतालीस रुपये अपनी अपनी ओर से मिला कर मैंने तुम्हारी माँ को मनी ऑर्डर भेज दिया है। फिकर मत करना... माँ तो सबकी एक जैसी होती है। वह क्यों भूखी रहे?"... तुम्हारा 'जेबकतरा।'

अभ्यास

पाठ से

1. लेखक की माँ को जेबकतरे ने पैसे क्यों भेजे?
2. ''जिसकी नौकरी छूट चुकी हो, उसके लिए नौ रूपये नौ सौ से कम नहीं होते।'' लेखक ने ऐसा क्यो कहा है?
3. जेबकतरा कहानी पढ़ने के बाद मन में कौन से भाव जागृत होते हैं? लिखिए।

पाठ से आगे

4D7MG2

1. आपके हिसाब से कौन–कौन से काम गलत हैं?
2. अगर आपके पैसे खो जाएँ तो आपको कैसा महसूस होगा?
3. बेरोजगारी के कारण क्या–क्या हैं?
4. लेखक ने अपने साथ घटी एक घटना को कहानी के रूप में प्रस्तुत किया है। आप भी अपने साथ घटी किसी घटना को इसी प्रकार प्रस्तुत करें।

भाषा के बारे में

उधेड़बुन– मन की एक स्थिति जिसमें तर्क वितर्क चल रहा होता है। आप ऐसे दो अवसरों के बारे में सोच कर लिखिए जब आपके मन में उधेड़बुन चली हो।

4DGIHP